प्रश्न : वोट इस टूथ?

टूथ है ही नहीं, हमने टूथ को बनाया है, टूथ की बात तब आती है…जब दो व्यक्ति विवाद पर उतरते है, जब वो दोनो अपने आपको सही साबित करने की कोशिश करे, यह ईगो की तरकीब है, ईगो कहता है “में” सही, ईगो अपने आप को साबित करने की कोशिश करता है, क्योंकि ईगो का एग्जिसटेंस ही नहीं है, इसलिए ईगो बिना बात पे दूसरे को ग़लत करने की कोशिश करता रहता है, ईगो अपने आपको सही साबित नहीं कर सकता, क्योंकि ईगो आर्टिफ़िशल है, उन्हें दूसरों को ग़लत साबित करने की कोशिश करनी पड़ेगी, क्या कोई बिना बात पे किसी को पूछने जाए की में सही हु ना?,,,दूसरा तुरंत पूछेगा की.. किस बात पे तुम सही हो भाई? तब ईगो के लिए मुश्किल हो जाती है, तो ईगो कहता है… भाई बात को खड़ी करनी पड़ेगी, बात तो कोई है **ही** नहीं…बिना बात पे पूछ रहा हु, की ‘में' सही हु ना? और ईगो की ज़िद यही है की कोई दूसरा उसे सही माने…क्या हम किसी को पूछ ने जाते है की “पानी पीने से प्यास बुजती है की नहीं ?”…नहीं जाते…क्योंकि इस बात पे कोई विवाद नहीं करेगा, हर कोई हाँ भर देगा, इस बात से कोई विवाद खड़ा नहीं होता, और पानी पीने से प्यास कभी ना बुजे यह एक अपवाद है, वह एक रोग है की कोई कारण हो कभी किसिने ओईल-फ़्राइड ज़्यादा खा लिया हो…पर सबका अनुभव है की पानी पीने से प्यास बुज जाती है, इसलिए यह प्रकृति का भाग़ है, यह शरीर की प्रकृति है की शरीर को प्यास लगे और पानी मिले तो प्यास बुज जाती है, जैसे सूखे हुवे पोधे को पानी मिले तो हर भरा हो जाता है…पोधे को प्यास लगी थी इसलिए सुख गया था, अब उसे पानी मिला तो हरा भरा हो गया, यह निशानी है की उनकी प्यास बुज गई, पोधे के पास शब्द तो नहीं की वो इंसान जैसे बोल पाए, इसलिए पानी मिलने से पोधे का हर भरा हो जाना यह एक संकेत है की उनकी प्यास बुज गई , लेकिन पोधे की प्यास भी पानी से बुज गई , शरीर की प्यास भी पानी से बुज गई , क्योंकि हम सबको बनाने वाला “वह” एक है, पर इस बात से ईगो को ठेस पहोचती है, इसलिए वह पोधे से तो लड़ नहीं सकता क्योंकि पोधे को कुछ भी पूछो वह तो “हाँ” की भाषा ही बोलता है, वह इंसान के जितना जीवंत नहीं है, फिर भी ‘उनके’ प्रति अनुग्रह से भरा है, इस अनुग्रह को व्यक्त करने के लिए कभी फूल खिलाता है, कभी फल देता है, औषधी देता है, इस बात से मनुष्य के ईगो को और ठेस पहोचती है, इसलिए अपने आपको कहता है की दूसरे जीवों से इंसान बड़ा है, अरे भाई कभी दूसरे जीवों को तो पूछो, तो वह कहता है हम अपने से छोटे जीवों से क्या ज़ुबान लड़ाए, और दूसरी दिक़्क़त यह है की पौधे को तुम पूछो की ‘इंसान तुमसे बड़ा है ना?’,,, तो कहेगा ‘हाँ’, अगर उनसे पूछो की ‘तुम मुजसे छोटे हो ना?’,,, तो कहेगा ‘हाँ’, पर इस बात मनुष्य की बुद्धि स्वीकार नहीं करती, जब तक कोई बात साबित ना हो,,, जब तक बुद्धि ईगो को संतुष्टि वाला जवाब ना दे तब तक ईगो मानेगा नहीं, और “उसने” बुद्धि को ईगो से ऊपर रखा है, इसलिए ईगो को बुद्धि के पास तो जाना पड़ेगा, इसलिए पौधा कहता है की में क्यूँ कोई बात को साबित करूँ, मेरा कोई ईगो नहीं है, में जैसा हु वैसा हु, अगर ‘उसने’ मुजे छोटा बनाया है तो छोटा, और बड़ा बनाया है बड़ा, हम सब कुछ स्वीकार करते है, ज़िद तो तुम्हारी है की तुम बड़े हो, तो तुम्हें साबित करना है तो करो ना करना है तो ना करो, इसलिए इंसान दूसरे जीवों के साथ नहीं लड़ता है, वह दूसरे इंसान से लड़ता है, और इंसान इंसान से लड़ता है उस बात पे उन्हें बड़ा मज़ा आता है,

क्योंकि सब जगह पे उनके जैसे ही लोग है, सब लोग तय्यार ही बेठे है की कब उसे लड़ने की बात मिल जाए, मनुष्य के इतिहास में कुछ लोग हुवे है जैसे बुद्धा, महावीर, दूसरे भी हुवे होंगे पर मुजे ‘लेबल’ नहीं पता, क्योंकि कभी भी कोई उनके साथ एक हो जाता है, ‘ख़ुद’ हो जाता है, फिर जो भी कहो सारे नेम ‘उनके’ है, भिर भी ‘वह’ अनाम है, जो अपना ईगो छोड़के ‘उनके’ साथ एक हो गए, वह ‘ख़ुद’ हो गए, वह ‘केवल’ हो गए, ‘एक मात्र’ हो गए, इसलिए मनुष्य को मनुष्य के साथ लड़ना बहुत सरल है, पर मनुष्य के इतिहास में हमारे कोई पूर्वज,,, आज के इंसानो जितने समज़दार नहीं रहे होंगे, तब वह पोधे से लड़ने गए होंगे, और यह सब बात बनी होगी, फिर उन्होंने अपनी अगली पीढ़ी को सिखाया होगा, की भाई दूसरे जीवों से लड़ने नहीं जाना, तुम पेड़ पोधे से लड़ने नहीं जाना, अरे भाई वो तो लड़ने के लिए तय्यार ही नहीं है, सारी बात पे “हाँ” कहते है, समय बर्बाद होगा, तुम अपना ईगो साबित ना कर पाओगे, इसलिए इंसान के साथ ही लड़ो, बिचारे अपने वाले है, उन्हें भी मोका मिलेगा अपने ईगो साबित करने के लिए, ऐसा मनुष्य के पूर्वज ने सिखाया इसलिए अब वो पेड़ पोधे से नहीं लड़ते है, आपने बंदर वाली कहानी सुनी होगी, वो टोपी वाला बंदर, टोपी वाला पेड़ के नीचे सोता है और बंदर टोपी लेके जाते है, तो वो टोपी वाला अपनी टोपी उतार देता है, बंदर उनकी नक़ल करते है और जो उन्होंने टोपी पहनी थी वो फेंक देते है तो टोपी वाला वापस अपनी टोपियाँ लेके चला जाता है, और अपने बेटे को सिखा के जाता है की जब बंदर टोपी लेके जाए तो **ऐसा** करना, वैसे ही मनुष्य के ईगोइस्टिक पूर्वज ने उन्हें सिखाया की तुम अपना ईगो साबित करने पेड़ पोधे के पास मत जाना, इस बात का अमल ईगोइस्टिक लोग आज भी करते है, और यह कहानी नहीं है, इसलिए कोई किसी से बिना कारण के नहीं लड़ता है, पहले कोई कारण ढूँढेगा, तब वो किसी से लड़ने जा सकता है, और इंसान के लिए सुविधा जनक बात यह है की कोई एक इंसान कोई कारण ढूँढ ले लड़ने के लिए तो दूसरा तुरंत तय्यार हो जाता है, की चलो एक ज़ंज़ट तो गई कारण ढूँढने नहीं जाना है, लड़ने के लिए कारण तय्यार है, इसलिए तुरंत तय्यार हो जाता है, तो पानी पीने से प्यास बुज जाती है इस बात पे कोई किसी से लड़ने नहीं जाएगा, क्योंकि यह बात सीधी है, सबका अनुभव है, बुद्धि ईगो को ऐसा करने ना देगी, इस बात से ईगो का ही पोषण होता है, की पानी नहीं मिलेगा तो में ही मर जाऊँगा, में फिर अपने आपको साबित नहीं कर पाउँगा, बुद्धि की बात ईगो स्वीकार कर लेता है, हाँ ये सही है पानी नहीं मिलेगा तो शरीर नहीं रहेगा, और शरीर नहीं रहेगा तो में कहा रहूँगा, और दूसरा यह है की अगर हम सही है तो हमें क्या किसी से लड़ना, पानी पीने से प्यास बुजती है की नहीं इस बात पे क्यूँ कोई लड़ने जाएगा, अगर आप अपनी नज़र में सही हो तो आप को किसी से लड़ने की क्या ज़रूरत, अगर आप का नाम मेथिलाल है, और आपको कोई मेथिलाल कहे तो आप थोड़ी उनसे जगडा करने जाओगे, किसी को कोई उनके नेम से बुलाए तो कोई क्यूँ लड़ने जाएगा, हम किसी को वैसा बुलाए जैसा वो नहीं है तब मुश्किल हो जाती है, कई बार लोग अपने आप को दिखाने की कोशिश करते है की में ऐसा हु वैसा हु, इसका साफ़ मतलब है वैसा वो बिलकुल भी नहीं है, आर्टिफ़िशली है, अपनी नज़र में ग़लत है, ख़ुद की नज़र में गिरा हुवा है, इसलिए ईगो को ठेस पहोचती है, की वो ग़लत कैसे हो सकता है, इसलिए दिखाने की कोशिश करता है, और तब उसे कोई कहे की आप कह रहे है पर आप ऐसा लगते नहीं हो, तो नाराज़ हो जाएगा, या लड़ने लग

जाएगा,,,,,आप ऐसा कैसे कह सकते हो,,,, यह दोनो तरीक़ा ईगो का है, तो जब अंदर दो खड़ा हुवा इसलिए सही और ग़लत की बात आयी, एक ईगो, और दूसरा 'वह',,, परमात्मा। परमात्मा सश्वत है, ईगो मिथ्या है, परमात्मा अपने आप को साबित करने कुछ नहीं करते, किसी को उस पर श्रद्धा है की नहीं,,,,,वह कोई फ़िकर नहीं करता,,,,,,,आप मंदिर जाओ या ना जाओ फिर भी वह है,,,,कोई उसे सर जुकाए या ना जुकाए वह सबके प्रति सम भाव है,,,,कोई नाराज़गी नहीं, आप उसे गाली तो फिर भी कोई शिकायत नहीं, वह फिर भी तुम्हें जीने के लिए हवा पानी देगा, खाने के लिए भोजन देगा, अपनी कृपा बरसाता रहता है, हम उसे भूल जाए फिर भी वह हमें एक क्षण के लिए भी नहीं भूलता, दूसरा ईगो,,,जिसका कोई वजूद नहीं है, ख़ुद अपने आपको बड़ा करने की कोशिश करता है। वैज्ञानिक टमाटर को तिखा बनाने में लगे है, टमाटर तो खट्टे होने चाहिए , क्योंकि वही उनका स्वभाव है, अगर तिखा खाना है तो मिर्ची है, पर इंसान को ईगो को साबित करना है, की वो परमात्मा से बड़े है, तो अंदर एक परमात्मा है जो साश्वत है, वह 'ख़ुद' है, किसी प्रमाण की ज़रूरत नहीं, अंदर दूसरा ईगो जो है वो अपने को साबित करने के लिए परमात्मा का जो बनाया हुवा है उन्हें बदलने की कोशिश करता है, तो अंदर दो पेदा हुवे, इसलिए ट्रूथ की बात आयी, और इस ट्रूथ को ईगो ने पेदा किया, अपनी बात को सही साबित करने के लिए कारण पेदा किया, क्योंकि हर लड़ाय का एक मुख्य कारण होता है की 'सही कोन', हर लड़ाय,,,,सारे विवाद,,,,इसलिए लडे जाते है की सही कोन, अंदर दो दिखाय देते है इसलिए बाहर दो दिखाय देते है, अंदर और बाहर एक है, इंसान दूसरे इंसान को ग़लत इसलिए कहता है ताकि वह ख़ुद को सही कह सके। इस तरीक़े से ख़ुद को सही कहने का कारण ढूँढ लेता है, इंसान के शरीर की प्यास जो पानी बुजाती है वही पानी से पोधे की भी प्यास बुजती है, पर बाहर उन्हें दो दिखाय देता है, एक वो और दूसरे जीव, अपने ईगो को अलग रखा,,,, बाक़ी दूसरे जीवों को एक साथ जोड़ दिया, सारे जीवों में इंसान अलग, 'उनसे' ऊपर, इसलिए जब तक ईगो न मिटेगा तब तक दो है, और जब ईगो मिट गया तब एक हो गया, तब अंदर भी एक, बाहर भी एक, फिर ना पेड़ है ना पोधे है, सब वही है, अब कोई ट्रूथ की बात नहीं है, अब कोई साबित करने वाला नहीं है, अब कोई कारण ढूँढने वाला नहीं है, जो है वो 'वह' उसे कुछ साबित नहीं करना है, क्योंकि 'वही' है अपनी ही अन्तर्गत शक्ति से ख़ुद को जानने वाला, वह 'वही' है।

Aasthit